मेरा प्रेम स्वीकार करो

- आचार्य श्री १०८ विमर्श सागर जी

मौन मुद्रा

मुझे
अपने निकट पाओगे,
जब-जब तुम
मेरे निकट आओगे।
प्रभु की मौन मुद्रा
सचमुच
यही तो दे रही उपदेश,
अशेष भावों से
कर लो - कर लो
प्रभु-यान में प्रवेश
फूल में खुशबू की तरह
हमेश-हमेश।

12-09-2006
dsVk

मेरा प्रेम स्वीकार करो

दीवानगी

क्या बताऊँ मैं तुम्हें.........?
क्या सुनाऊँ मैं तुम्हें.........?
क्या दिखाऊँ मैं तुम्हें.........?
मेरे प्रभु !
तुम मेरी आस हो,
तुम मेरी प्यास हो,
तुम मेरे विश्वास हो,
मेरी हर असीम भावना का
एक तुम ही तो
विराटतम आकाश हो,
सच प्रभो !
मेरी वीतरागता की दीवानगी
सिर्फ इतना कहती है
मैं तुम्हारे पास हूँ,
तुम हमारे पास हो।

12-09-2006
dsVk

दान

आपकी करुणा
मुझ पर बरस रही है,
मेरी अनुभूति
ऐसा स्वीकार कर
सहज हरष रही है।
हे वीतरागी प्रभु !
सोच रहा हूँ
अनन्त भवों का पुण्य
तुम्हें दान कर दूँ,
मेरे प्रभु....
क्या तुम भी सोच रहे हो
क्यों न इस बालक को
अपने जैसी
वीतरागता प्रदान कर दूँ।
मैं खड़ा हूँ
झोली फैलाये
तुम्हारे पावन द्वार पर
बनकर 'मुनि विमर्शसागर'।

12-09-2006
dksVk

इन्तजार

मेरा हृदय,
सिर्फ
तुम्हारा इन्तज़ार करता
है।
कभी तो मिलोगे तुम
यह सोच
रोज-रोज
नया श्रृंगार करता है
हे वीतरागी प्रभु।
तुम्हारी चाहत में
दिगम्बरत्व पाया है,
राग-द्वेष को तजकर
सहज ज्ञानानंद स्वभाव
अपनाया है।
तुम आओगे - जरूर
आओगे,
और यदि नहीं भी आये
तो भी इतना विश्वास है
तुम मुझे
अपने पास जरूर
बुलाओगे।

13-09-2006
dksVk

वीतरागी सम्मोहन

तुम्हारी दूरी
अब मुझे
बिल्कुल नहीं सुहाती,
पल-प्रतिपल
सिर्फ
तुम्हारी ही याद आती।
हे प्रभो!
तुम्हारा वीतरागी सम्मोहन
सचमुच जादुई है,
तुम्हारी क्षणभर की अनुभूति
अपूर्व-अपूर्व हुई है
अब मुझे
और नहीं भटकना
इस दुःखमय संसार में,
इसीलिए प्रयासरत् हूँ
आपकी तरह
निज आत्मा के उद्धार में।

ॐ

आइना

मेरे लिये
तुम क्या हो ?
यह सिर्फ मैं जानता हूँ,
अपनी ज़िंदगी से ज्यादा
मैं तुम्हें मानता हूँ
सच
तुम मेरी ज़िंदगी का आइना हो,
अब तुम्हीं बताओ
तुम्हें अपने हृदय के निकट
क्यों न रखूँ ?
हे प्रभो !
मेरा पवित्रा प्रेम
स्वीकार करो,
देकर निर्विकल्प समाधि
मेरा भी उद्धार करो।
प्रभो ! बस इतनी सी तो बात है,
इसीलिये मेरी
तुमसे मुलाकात है।

ॐ

विमर्श

मेरी विरहिन आँखें
चाहती हैं तुम्हारा दर्श,
सोते-जागते, चलते-फिरते
मन की गहराईयों में
सिर्फ तुम्हें खोजता हूँ
करता हूँ निरन्तर विमर्श।
होकर कभी-कभी सफल
जब तेरा दीदार पाता हूँ
व्यक्त नहीं कर पाता
आनन्द की हिलोरें
और
सहज अनुभव का हर्ष।
प्रभो !
मैं इससे ऊपर न जाऊँ
तो, नीचे मत जाने देना
क्योंकि
ऊपर जाने का मार्ग तो यही है।

13-09-2006
dsk

मेरा प्रेम स्वीकार करो

संभव-असंभव

मैं जानता हूँ
तुम मुझे याद नहीं करते
तुम्हारे लिये यह संभव है,
लेकिन
मैं तुम्हें याद न करूँ
यह मेरे लिये तो असंभव है।
मेरे प्रभो !
कभी तो तुमने भी याद किया होगा
आत्मस्थ चिन्मय देव को/परमात्मा को
तभी पाई होगी
मंजिल अविनाशी।
सच, स्वामी !
यही सोचकर
मैं भी तुम्हें याद करता हूँ
बिल्कुल आपकी तरह
अपनी चैतन्य बगिया को
स्वानुभव से आबाद करता हूँ।

13-09-2006
dsk

तुम्हारे सिवा

जब से तुम्हें
हृदय में बिठाया है
आँखों में बसाया है
यादों में सजाया है,
सच कहूँ
तुम्हारे सिवा
कोई भी, अपना सा नज़र नहीं
आया है।
आँखों में
बसती है तुम्हारी सूरत,
स्वप्नों में
दिखती है तुम्हारी मूरत।
हे मेरे प्रभो !
मेरी यह चाहत कभी कम न हो,
आपके विरह का कभी गम न हो।
मैंने तुम्हें चाहा है, आगे भी चाहूँगा
जब तक निवार्ण नहीं मिलता
जब तक
तुम्हारे ही गीत गाऊँगा।

14-09-2006
dsVk

मेरा प्रेम स्वीकार करो

चाहत के चर्चे

तुम्हारे लिये तो
रोना भी अच्छा लगता है
क्योंकि
यूँ भी हो जाता है
कभी-कभी तुमसे मिलना
कपोल पर ढुलकते हुये आँसू
मुझे तुम्हारे करीब लाते हैं,
मेरी निश्छल चाहत को
दोगुना कर जाते हैं।
हे वीतरागी भगवन्!
करके तुमसे गहन प्रेम
फिर भी मैं विरागी हूँ,
यह मेरा समर्पण है
इसीलिये तो आपका अनुरागी हूँ।
मेरी चाहत के चर्चे
बाजारों में नहीं, तीनों लोकों में
रहेंगे
क्योंकि, मैंने भी कसम खाई है
साथ जियेंगे - साथ मरेंगे।

14-09-2006
dsVk

खाली झोली

मेरे पास क्या है
जो मैं तुम्हें दे सकूँ
सिवाय दुःख, पीड़ा, संताप के,
लेकिन
तुम्हारे पास सब कुछ है
जो मैं ले सकूँ
और भर लूँ अपनी खाली झोली
आपके परम प्रसाद से।
मेरे प्यारे-प्यारे भगवन् !
समता, प्रेम, क्षमा, विनय, संतोष
अनन्त गुणों के
आप ही तो हैं अक्षय कोष।
भूलकर आपको
भटका हूँ भव जंगल में
किन्तु अब समझ आई
बड़ी लम्बी यह जुदाई
प्रभु ! मेंटो मेरे जन्म-मरण दोष
बना लो, अपने समान निर्दोष।

14-09-2006
dsVk

मुझे पता है

अपने मन मंदिर में
श्रद्धा की वेदी पर
तुम्हें बिठाया है हमने,
एक छोटा सा टिमटिमाता हुआ
समर्पण का दीप जलाया है हमने।
तुम्हें पता हो या नहीं
लेकिन मुझे पता है
तुम मेरे निकट हो,
मेरे हर संकट की घड़ी में
तुम हो मेरे साथ
फिर भी अप्रगट हो।
मेरे प्रभो !
मुझे इतनी शक्ति दो
सम्यक् भक्ति दो,
उसकी अभिव्यक्ति दो
सारी दुनिया रुठे तो रुठे,
लेकिन मेरी श्रद्धा न टूटे
मेरा समर्पण कभी न छूटे।

14-09-2006
dsVk

मेरी खुशी

तुम्हारे उपवन में
फूल बनकर खिलता रहूँ,
तुम्हारी दहलीज़ पर
दीप बनकर जलता रहूँ।
बाँटता रहूँ
इस जगत को
तुम्हारी खुशबू और प्रकाश,
किन्तु न टूटे कभी
मन का संकल्प और उल्लास।
मेरे प्रभो !
मुझे इतनी शक्ति और ज्ञान देना
जिससे
झंझावत में भी
खिलता रहूँ - जलता रहूँ,
तुम्हारे पद्‌चिन्हों पर चलता रहूँ।
होगा, ऐसा ही होगा
क्योंकि तुम मेरे साथ हो
तुम मेरी खुशी मेरा अहसास हो।

14-09-2006
dksVk

निस्वार्थी बनूँ

मत पूछो मुझसे मेरी पीड़ा....
मत कुरेदो मेरे अतीत के घाव...
.,
हो सके तो लगा दो मल्हम
देकर मुझे प्रेम की शीतल छाँव।
अतीत याद कर सिहर जाता हूँ,
कभी न हों ऐसे मंज़र
किसी के भी जीवन में
यह सोच
करुणा से भर जाता हूँ।
मेरे प्रभो !
मैंने देख ली इस जगत की सच्चाई,
स्वार्थ के रहते
पराये भी बन जाते सगे भाई।
किन्तु स्वार्थ के टूटते ही
अपने सगे भी साथ नहीं देते
बन जाते हैं कसाई,
प्रभो ! मैं निस्वार्थी बनूँ
आपकी तरह हातिमताई।

15-09-2006
dksVk

अधूरी ज़िंदगी

अधूरी ज़िंदगी
मैं अब नहीं जीना चाहता
अब तो सिर्फ
मैं तुम्हारा साथ चाहता हूँ।
अणु-अणु को साथी बनाया,
किन्तु
साथ किसी ने भी नहीं निभाया।
मैं भटकता रहा
अकेला ही
सच्चे साथी की तलाश में
प्रभो !
आज मेरा सौभाग्य जगा है,
अधूरी ज़िंदगी को भरनेवाला
कोई अपना सा लगा है।
वो तुम हो स्वामी, सिर्फ तुम
तुम्हारे सिवा
इस सब्जबाग़ दुनिया में
सिर्फ दग़ा ही दग़ा है।

15-09-2006
dsk

सिन्दूर

तुम्हारी निकटता से
जीवन में कुछ
नयापन आ गया है,
इसीलिये तुम्हारा साथ
मुझे हर कदम पर भा गया है।
तुम मुझे अपना मानो, न मानो
यह मेरी श्रद्धा है
जो तुम्हें अपना कहना आ गया
है।
मेरे प्रभो !
तुम्हारी तो हर बात निराली है,
लेकिन
मेरी अनन्य श्रद्धा भी
कोयल की तरह मतवाली है।
जब भी तुम्हें देखती है
कूकने लग जाती है,
पतझड़ के मौसम में भी
बसन्त ऋतु आ जाती है।
प्रभो ! यह निकटता, तब तक
दूर न हो
जब तक मुक्तिवधु की माँग में, मेरा सिंदूर
न हो।

15-09-2006
dsk

समाधिमरण

जब-जब तुम्हें याद करता हूँ
धड़कनें बढ़ जाती हैं
कुछ डर सा जाता हूँ,
कहीं कोई मुझसे
तुम्हारी अमिट यादें छीन न ले।
मेरे प्रभो !
जब भी तुम्हें याद किया है,
मेरे अशुभ कर्मों ने दिया दुःख
तोड़ लिया तुमसे रिश्ता
मोड़ लिया अपना मुख
ऐसा मेरे साथ
अनेक बार हुआ है।
लेकिन
अब ऐसा करना नहीं चाहता,
आप को याद किये बिना
अब मरना नहीं चाहता।
प्रभो ! दे दो अपनी शरण
मृत्यु नहीं, समाधिमरण।

15-09-2006
dlsVk

सच्ची बंदगी

मेरा समर्पण
तुम ठुकरा नहीं सकते
क्योंकि तुम्हें
ठुकराना नहीं आता
इसीलिये तो
दुनिया तुम्हारी दीवानी है,
लेकिन
दुनिया तुम्हारे लिये
फिर भी अनजानी है।
मेरे प्रभो !
तुम सब कुछ जानकर भी
लोकालोक को पहचान कर भी
नहीं करते रागद्वेष - हो वीतरागी,
इसीलिए तो मेरी श्रद्धा
है तुम्हारी अनुरागी।
बहती नदी की तरह
अब मेरी ज़िंदगी है,
तुझ सागर में मिलना, सच्ची बंदगी
है।

15-09-2006
dlsVk

प्रवास नहीं निवास

फूल डाली से
कभी भी बिछुड़ सकता है,
भँवरा
चूसकर पराग फूल से
कभी भी उड़ सकता है।
लेकिन
हमारा - तुम्हारा बिछुड़ना मुश्किल
है
आज मैं तुम्हें श्रद्धा से पाऊँगा,
कल तुम्हारे नगर में रहने को
आऊँगा।
मेरे प्रभो !
तुम्हारा निवास सिद्धालय है
मेरा प्रवास श्रद्धालय है
अब मैं, प्रवास नहीं निवास चाहता
हूँ,
आपकी तरह
शुद्ध चेतना की श्वांस चाहता हूँ।
क्षणभर का मिलन नहीं
अपितु अविनाशी, शाश्वत,
युगों-युगों तक
मधुर मिलन का अहसास चाहता
हूँ

16-09-2006
dsK

तुम्हारा बेटा

मुझे मत रोको
बहने दो यादों के प्रवाह में
तुम्हारा विरह
मुझे तुम्हारे निकट रखता है
तुम मिल जाते
तो शायद
इतनी सुन्दर यादों से वंचित रह
जाता
शास्त्रा कहते हैं
यह पंचमकाल है,
मेरे प्रभो !
मैं सोचता हूँ
शायद यह मेरा ननिहाल है।
जब ननिहाल से अपने घर आऊँगा
तब सहज ही आपको पाऊँ
हे प्रभो !
तुम्हारा बेटा तुम्हें याद कर रहा
है,
तुम्हारी तरह अपनी ज़िंदगी का
नया अनुवाद कर रहा है।

16-09-2006
dsK

परीक्षा

सदियों-सदियों से रहकर मौन
तुम हमारे भीतर बस रहे हो,
मैं रो रहा हूँ
तुम हँस रहे हो।
मुझे विश्वास है तुम मिलोगे,
बीज से निकलकर
फूल बनकर खिलोगे।
मधुर मिलन की हर पल प्रतीक्षा
है,
मेरे प्रभो !
शायद यह मेरी
अब अंतिम परीक्षा है।
भरोसा है पास हो जाऊँगा,
फिर कहीं दूर नहीं
तुम्हें अपने में ही पाऊँगा।
लोग, मेरी इन बातों का
विश्वास नहीं करते,
शायद, भीतर बैठे शुद्ध चिन्मय
का
अहसास नहीं करते।

16-09-2006
dsVk

तुम कब आओगे

मेरा घूँघट उठाने,
तुम कब आओगे,
सेज पर बैठी
कब से इन्तजार कर रही हूँ तुम्हारा
नश्वर को पाकर, आख़िर
कब तक इठलाओगे,?
मैं परछाईं बनकर रह रही हूँ !
प्रिये मुक्ति !
मुझे क्षमा करो
मैं मतवाला हो गया था,
तुम्हारी चेतन चितवन से मुख
मोड़
पर में खो गया था,
अब कभी ऐसा नहीं करूँगा,
तुम मेरी परछाईं नहीं, साईं हो
अतीत को भुलाकर
तुम्हारे पास आकर
सिर्फ तुम्हारे लिये जिऊँगा।

16-09-2006
dsVk

रिश्ता

तुम्हारे बिन
वक्त कटता नहीं,
तुम्हारा नूर
आँखों से हटता नहीं।
मेरी ज़िंदगी का
अपरिमित अहसास हो तुम,
कभी न बुझने वाली
गहरी प्यास हो तुम।
मेरे प्रभो !
कब तक मुझमें छुपकर रहोगे,
खोज लूँगा तुम्हें
अपने भीतर आकर
कभी तो तुम मुझे अपना कहोगे।
देख लेना प्रभु
ऐसा रिश्ता बनाऊँगा,
मौत करेगी प्रणाम
जब तुम्हारे लिय
सारी दुनिया को ठुकराऊँगा।

16-09-2006
dksVk

अनन्य भक्ति

मेरे
अरमानों की किताब
अधरों की
मुस्कान हो तुम
तुम्हारे बिन मुझे चैन कहाँ,
जहाँ तुम हो
मैं भी रहता हूँ वहाँ।
आत्मा में ज्ञान-दर्शन की तरह,
पुद्गल में रस, गंध, वर्ण, स्पर्शन
की तरह।
मेरे प्रभो !
यह मेरी धृष्ठता नहीं शिष्टता है,
मेरी अनन्य भक्ति की
विशिष्टता है।
मुझे
अपने पास रहने दो
मैं ज्ञायक हूँ
सहज अपनी ओर बहने दो
निश्चय से निर्लिप्त
व्यवहार से स्वपर ज्ञायक कहने दो।

17-09-2006
dksVk

संकल्प

मेरे
हृदय के पास आओ
सुनो, मधुर प्रेम की झंकार
जिसमें
जरा भी नहीं अहंकार
समर्पण ही समर्पण है,
तुम्हें पाकर ही रहूँगा
ऐसा संकल्प प्रतिक्षण है।
मेरे प्रभो !
निश्चय से
मैं शुद्ध-बुद्ध हूँ, लेकिन
अनादि व्यवहार से
मैं अशुद्ध हूँ।
सच तुम्हारी प्रीति
और मेरी निश्चय साधना
मेरा संकल्प पूर्ण करायेगी।
तुम आज मुझमें समा रहे हो
कल मेरी आत्मा, हे सिद्ध प्रभु !
तुम्हारी आत्मा में समायेगी।

17-09-2006
dksVk

हमारा भविष्य

यह सच है
मैं तुम्हारी जरूरत नहीं हूँ
क्योंकि
तुम्हारा अतीत हूँ मैं,
मगर, यह भी सच है
तुम हमारे लिये बहुत जरूर हो
क्योंकि
हमारा भविष्य हो तुम ।
मेरे प्रभो !
मैं अपना
भविष्य सँवारना चाहता हूँ।
आप सम तप, त्याग, संयम
जीवन में उतारना चाहता हूँ।
बिना आपके
क्या मैं सागर तट पाऊँगा ?
कहीं मँझधार में ही
डूबकर मर जाऊँगा
ओ मेरे भविष्य, बनो मेरी माँझी।

17-09-2006
dksVk

क्षणिक ध्यान

तुम्हारा क्षणिक ध्यान
मुझे
शान्ति से भर देता है।
मिटाकर
मन की कलुषता,
क्रोधादिक विकार भाव,
निरंजन-निर्विकार कर देता है।
हे आनन्द के सरोवर !
मेरे प्रभो !
सचमुच
आप स्वानुभव प्रमाण हो,
क्लान्त भविजीवों को
एकान्त से प्राण हो।
घिरा हुआ हूँ
व्यवहार संयोगों से,
चाह रहा हूँ
आपकी तरह वियोग
जनम-मरण के रोगों से।

17-09-2006
dsK

मेरो प्रेम स्वीकार करो

मेरा प्रेम स्वीकार करो
मैं हूँ अज्ञानी
पर्याय में दुःखी
मेरा उद्धार करो।
अनन्त भवों की पीड़ा
तुम्हें कैसे सुनाऊँ ?
ज़ख्म गहरे हैं
तुम्हें कैसे बताऊँ ?
तुम तो अंतर्यामी हो,
तीनों लोको के प्राणियों के
एक तुम्ही तो स्वामी हो।
मेरे प्रभो !
अपनी व्यथा सुनाना
मेरी भूल होगी,
तुमसे प्रीति लगाना
होगा भूलों का प्रायश्चित
फिर मेरी समर्पित भक्ति
जरूर-जरूर कबूल होगी।

17-09-2006
dsK

तुम्हारा स्पर्श

मैं कहीं थक न जाऊँ
तुम्हारा
इंतजार करते-करते
अब, आ भी जाओ
उद्धार करने
मुझ अहिल्या का।
हे पार्श्व प्रभो !
तुम्हारा स्पर्श
लोहे का स्वर्ण बनाता है,
अनन्त भवों का दुखियारा
तुम्हारे दर से
हँसता-हँसता जाता है।
मैं, पहनकर कर्म की जंजीरें
तुम्हारे द्वार पर कैसे आउँ,
मुझ चन्दनबाला के पास
तुम्हें ही आना होगा
बनकर महावीर
तभी मिटेगी
हमारी भव-भव की पीर।

श्रद्धा का निमंत्राण

मंदिर में बैठने से क्या होगा ?
मेरे
मन मंदिर में आकर
निर्मल हृदयासन पर विराजो
तुम्हारा बड़ा उपकार होगा।
लोग कहते हैं
तुम नहीं आओगे
तुमने आना-जाना छोड़ दिया है
मैं कहता हूँ
तुम जरूर आते हो,
सच्ची श्रद्धा का रिश्ता
तुम भी निभाते हो।
मेरे प्रभो ।
जिसने तुम्हें दिल से पुकारा है,
अंजन और अंजना की तरह
तुम्हीं ने तो तारा है।
मुझे तुम्हारा इंतजार है,
तुम जरूर आओगे, क्योंकि
श्रद्धा का निमंत्राण तुम्हें भी स्वीकार
है।

उपकारी

राग की जंजीरें
अब मैंने तोड़ दी हैं
पाकर
तुम्हारा सहज अनुराग।
कितनी अनोखी बात है
आप नहीं करते
राग-अनुराग,
लेकिन
अपने अनुरागी को
बना देते हो
विराग-वीतराग
हे प्रभो !
आप कितने उपकारी हैं
डूबकर
ज्ञानानन्द स्वभावी निज आत्मा में
रहते हैं वीतरागी,
भवसागर पार होते हैं हम
अनादि के सरागी।

19-09-2006
dsk

प्रार्थना

मैं,
तुमसे दूर न जाऊँ
इसके लिए
हर सुबह
प्रार्थना करता हूँ।
मैं, तुम्हें,
अपने ह्दय में बसाऊँ
इसके लिए
हर साँझ
प्रार्थना करता हूँ।
मैं,
तुम जैसा बन जाऊँ
इसके लिये
हर पल
तुम्हारी प्रार्थना करता हूँ।
मेरे प्रभो !
मैं स्वानुभव अभ्यासी हूँ
आपकी तरह
अखण्ड, अविनाशी हूँ।

20-09-2006
dsk

चमक-दमक

आयोजनों की चमक-दमक
पहले खूब भाती थी
रात-दिन चिन्ता
आयोजनों की सताती थी।
अपना कम
भक्तों का विकल्प ज्यादा आता
था,
वो कहाँ ठहरेंगे
यह विचार ही सताता था।
मेरे प्रभो !
अब सब चमक-दमक चली गई,
क्योंकि आयोजनों में
मेरी साधना ही छली गई।
सम्यक् साधना का आयोजन
निरन्तर चल रहा है,
स्वानुभव का दीप
सहज जल रहा है
यद्यिप, आज भी आयोजन है
लेकिन मुझे साधना से प्रयोजन
है।

21-09-2006
dksVk

मन पंछी

मेरा मन पंछी
उड़-उड़कर
तुम्हारे पास आता है,
मैं कितना भी समझाऊँ
इसकी समझ में
कुछ भी नहीं आता है।
हर पल-हर घड़ी
रहती है बात तुम्हारी,
मैं खुश हूँ
अपने मन के समर्पण से
देखकर सच्ची श्रद्धा प्यारी।
मेरे प्रभो !
मन का आपसे अनुराग ही
मेरा आत्म कल्याण है,
मोक्षमार्ग पर
प्रतिक्षण प्रयाण है।
ओ मेरे मन पंछी
चल, उड़ चल
अपने प्रभु के पास।

22-09-2006
dksVk

तुम्हारा साथ

तुम्हारा साथ
मुझे बहुत भाता है,
तुम्हारे बिन
रहा नहीं जाता है।
आख़िर
तुम्हीं ने तो हमें
आगे बढ़ना सिखाया
कदम-कदम पर
कषायों से लड़ना सिखाया
सहज शांति का मार्ग
तुम्हीं ने तो बताया
मेरे प्रभो !
भव-भव में रहे
मुझे तुमसे प्रीति,
जब तक
मुझे प्राप्त नहीं होती
दो घड़ी के लिए
स्वात्मप्रतीति।

नासाग्र

मुझे
तुम बुलाओ, चाहे न बुलाओ
मैं तुम्हारे प्रेम में पगा
तुम्हारे पास जरूर आऊँगा,
तुम मुझे
अपने हृदय में भले मत बिठाओ
मैं तुम्हें
अपने हृदय में जरूर बिठाऊँगा।
मेरे प्रभो !
तुम्हारे दर पर आना
तुम्हें हृदय में बुलाना
मेरी जरूरत है, क्योंकि
तुम्हारी नासाग्र दृष्टि
मुझे नासाग्र नहीं करती
अपितु देती है उपदेश
न् आशा अग्र,
अर्थात्
आगे संसार की आशा मत करो
स्वयं हो जाता हूँ नासाग्र।

समता-क्षमता

तुम कहीं भी रहो
मुझे इतनी शक्ति देते रहना
मैं तुम्हारे गीत गाता रहूँ,
तुम्हारी यादों का उपवन
भक्ति से सजाता रहूँ।
सघंर्षों में कभी न घबराऊँ
आपकी तरह मुस्कुराते हुये
मंजिल की ओर बढ़ता जाऊँ।
मेरे प्रभो !
मेरी राहों में
इतने फूल भी न हों
कि मैं
फूलों में ही इठलाने लगूँ,
इतने काँटे भी न हों
कि आँसू बहाने लगूँ।
मुझे समता देना
राग-द्वेष से दूर रहूँ
इतनी क्षमता देना।

22-09-2006

भावना

उगते हुये सूरज को देखकर
मैं भावना करता हूँ
मेरे जीवन में
धर्म का सूर्य उदित हो रहा है।
डूबते हुये सूरज को देखकर
मैं भावना करता हूँ
मेरा दुःखमय संसार
अस्त को प्राप्त हो रहा है।
शायद मेरा यह प्रभु साक्षी में
चिन्तन
मेरी सम्यक् प्रार्थना है,
मैं आगे बढ रहा हूँ
निरन्तर लक्ष्य की ओर।
मेरे प्रभो !
मैं चाहता हूँ
अपनी आँखों से
उगते हुये-डूबते हुये सूरज को न
देखूँ
प्रकटकर केवलज्ञान
लोकालोक को सहज देखूँ।

22-09-2006

बहाना

सच कहूँ
वीरान ज़िंदगी में
मधुमास लाते हो तुम,
बिना कुछ दिये
बिना कुछ लिये
श्रद्धा के निमंत्राण से
जिसके भी पास आते हो तुम।
तुम्हारा
यूँ चुपके से आना ही
मुझे बहुत भाता है,
मेरी श्रद्धा के देवता
अब मेरा मन
पल-प्रतिपल
सिर्फ तुम्हें ही बुलाता है।
मेरे प्रभो !
श्रद्धा का निमंत्राण कभी मत
ठुकराना
मैं तुमसे मिलता रहूँ
श्रद्धा तो मिलन का है बहाना।

23-09-2006
dksVk

कदम

तुम्हारी राह पर
अब मैंने
कदम बढ़ाया है,
क्योंकि
संसार की राह में
मेरा कदम
हर जगह लड़खड़ाया है।
मैं
सँभलकर चलना चाहता हूँ,
लड़खड़ाना अब बदलना चाहता
हूँ।
मेरे प्रभो !
तुमने मुक्ति का मार्ग बताया है,
संवर और निर्जरा से
अविनाशी - अतीन्द्रिय
चिदानन्द पाया है।
अब मैं आस्रव-बंध को हटाऊँगा
आपकी तरह अविनाशी
चिदानन्द पाऊँगा।

23-09-2006
dksVk

अहसास

मेरी श्रद्धा
मुझे
तुम्हारा अहसास कराती है,
तुम दूर नहीं
पास हो
ढाढस बँधाती है।
मैं चल रहा हूँ रात-दिन
लेकर दिया हाथ में,
कहीं बुझ न जाये
कषायों के तूफान से इसलिये
रखना चाहता हूँ तुम्हें साथ में।
मेरे प्रभो।
मैं जानता हूँ
यह मार्ग बिल्कुल एकाकी है,
निज आत्मा का अनुभव ही
एक मात्रा साकी है।
लेकिन
तुम्हें पाकर ही एकाकी हो पाऊँगा
अभेद आत्मानुभव से जब तुम सम
बन जाऊँगा।

ओ मेरे गीत

तुम्हें छोड़कर
गैरों को चाहा
खाता रहा ठोकरें
पाता रहा
चतुर्गति का चौराहा।
सरागी-वीतरागी का
नहीं कर पाया भेद,
तुम्हें देखकर
हो रहा है खेद।
मेरे प्रभो !
मिथ्यात्व महा दुखदाई है,
यह समझ
मुझे आज आई है।
तुम्हारे सिवा
अब किसी को नहीं चाहूँगा,
निज आत्मा के सिवा
अब कही नहीं जाऊँगा।
स्वीकारो मेरी प्रीत-ओ मेरे मीत।

23-09-2006
dsk

गिरना

तुम्हारा दर्शन
दर्शन मोहनीय को मिटाता है
तुम्हारा अनुराग
चारित्रामोहनीय को रुलाता है।
सचमुच
तुम्हारी महिमा अपरम्पार है
इसीलिये तो मुझे
सिर्फ तुमसे प्यार है।
मेरे प्रभो !
मेरी बुद्धि
निजधर्म में प्रवीण है।
यद्यिप
स्वस्थ भाव से गिरना
कथंचित चारित्रा
कथंचित भ्रष्टाचार है
इससे नीचे न गिर जाऊँ
प्रार्थना बारम्बार है।

23-09-2006
dsk

मिलन

मेरी ज़िंदगी की
हर चाहत में तुम हो,
मेरी खुशी – मेरे गम
मेरी राहत में तुम हो।
बह रहा हूँ
बनकर नदी, तुम्हारी ओर,
न जाने कब मिलन होगा ?
कब आयेगी मिलन की भोर ?
मेरे प्रभो !
मौत लेने आये
उसके पहले
तुम आ जाना,
तुमसे मिलकर
खुशी के आँसू बहाऊँगा,
समतापूर्वक मरने का
आनन्द उठाऊँगा।
तुम्हीं न तो कहा था
यह समाधिमरण है
मेरा नहीं मृत्यु का हरण है।

*y{;

23-09-2006
dsk

मैं सोचता हूँ

मैं सोचता हूँ
नींबू को उतना निचोड़ो
जितना रस है
ज्यादा निचोड़ोगे
तो कड़वाहट आयेगी,
देह को उतना ही पोषो
जितने में देह सहयोग करे
ज्यादा पोषोगे
तो, आत्मा मर जायेगी।
मेरे प्रभो !
मुझे
निज आत्मा से प्रेम है,
स्वात्मोपलब्धि के लिये
कथंचित देह मेरा एम'है।
जिस दिन
तुम्हारी तरह निज में समा जाऊँगा
उस दिन
देह का भी उपकार भूल जाऊँगा।

23-09-2006
dsk

स्वाभिमानी

ओ मेरे प्रिय !
तुम्हारे दीपक की रोशनी में
अब तक चला हूँ
लेकिन कब तक चलूँगा ?
अपने आपको इस तरह
कब तक छलूँगा ?
मुझे
अपना दीपक जलाना होगा
निज को निज से मिलाना होगा।
मेरे प्रभो !
ऐसा तुमने भी किया है,
छोड़कर सारे सहारे
स्वयं के लिये जिया है।
आप कहते हो
यही तो निश्चय ध्यान है
भो चेतन !
यही तो सच्चा स्वाभिमान है
बनो ध्यानी - स्वाभिमानी।

23-09-2006
dsk

तस्वीर

बैठकर
सागर तट के किनारे
आती हुई हर लहर में
तुम्हारी तस्वीर देखता हूँ
कभी तुमने भी
आत्मा के सागर में
चिदानन्द की लहर का
अनुभव किया होगा
मैं भी इस लहर के लिए जी रहा
हूँ
गुजरकर व्यवहार के कंटकाकीर्ण
पथ से
ठहरकर निज आत्मा में
परम समता रस पी रहा हूँ।
लहर से लहर आने में
जैसे कुछ अन्तर है
झूलते हुये योगी का
यह कारण आभ्यन्तर है।

23-09-2006
dsk

वरदान

देखो !
तुम मुझे छोड़ मत देना,
मुझे
तुम्हारा ही सहारा है
तुम मेरा विश्वास
तोड़ मत देना।
सच कहूँ
यह बात मैं
तुमसे नहीं
तुम्हारे लिये खुद से कह रहा हूँ,
क्योंकि
तुम हो मेरी श्रद्धा के साथ
अगर मैं ही अपनी श्रद्धा तोड़ दूँ
तो मैं ही हूँ अनाथ।
मेरे प्रभो !
मैं श्रद्धा को सँभाल सकूँ
तुम्हें अनवरत हृदय में बिठाल
सकूँ
दे दो यही वरदान
ओ मेरे दयानिधान।

23-09-2006
dksVk

उपकार

तुम्हारा उपकार
कहाँ तक गाऊँ ?
तुम्हारे लिये लेखनी
कहाँ तक चलाऊँ ?
तुम बिन
इस जीवन का क्या अर्थ है,
हर खुशी,
हर उपलब्धि
तुम बिन व्यर्थ है।
मेरे प्रभो !
तुम मिल गये
मुझे जहान मिल गया,
संसार मुक्ति का
सच्चा ज्ञान मिल गया,
वीतरागता मुझमें समा रही है
या वीतरागता में, मैं समा रहा हूँ
अभेद में रहने का
वरदान मिल गया।

24-09-2006
dksVk

अतृप्ति

मैं, तुमसे
रोज-रोज मिलता हूँ,
फिर भी रहता हूँ व्याकुल
मिलने को हर पल मचलता हूँ।
तुम्हारा दर्शन
हर रोज करता हूँ,
फिर भी, नहीं बुझती प्यास
अतृप्त नैंनो की,
पाने
बारम्बार तुम्हें अपने सामने
ध्यान में उतरता हूँ।
मेरे प्रभो !
मुझे तुमसे प्रीत है,
स्वच्छंद मन पर
यही तो जीत है।
जब तक नहीं होता निवार्ण,
बनी रहे गहन अतृप्ति
तड़पते रहें तुम्हारे लिये मेरे प्राण।

24-09-2006

निःशंकित अंग

मुझे तुम पर कोई शंका नहीं,
जो तुमने कहा
वह सत्य है
न अन्य है - न अन्यथा।
आपकी सर्वज्ञता प्रणम्य है,
आपकी तत्त्वदेशना
अनुभवगम्य है,
आपकी वीतरागता
सहज सुरम्य है।
मेरे प्रभो !
मेरी अकाट्य श्रद्धा के केन्द्र
सिर्फ आप हो
इसलिये मैं निःशंकित हूँ,
मुक्तिमार्ग में
व्यवहार साथी हो तुम
निश्चय से स्वानुभूति में
निरत हूँ, अंकित हूँ।

24-09-2006

निःकांक्षित अंग

सुख-दुख
पुण्य-पाप के आधीन है
संसार दशा
सर्वथा कर्माधीन है।
इन्द्रियसुखों की आकांक्षा
निःकांक्षितपने में प्रदोष है
पुण्य-पाप
शुभ-अशुभ कर्म का श्रद्धान
देता सम्यक् संतोष है।
मैं चेतन
नित्यानन्दस्वभावी हूँ,
शुभाशुभ भावों से
पृथक - अभावी हूँ।
मेरे प्रभो !
पाप का बीज है इन्द्रिय सुख
मुझे नहीं इसकी आकांक्षा,
मैं निष्कांक्ष हूँ, करके
अतीन्द्रिय सुख की बाच्छा।

निर्विचिकित्सा अंग

देखकर साधर्मी को
प्रेम उमड़ता है,
ग्लानियुक्त शरीर में
घृणा नहीं करना
निर्विचिकित्सा के पालक श्रमण
की
सच्ची श्रमणता है।
स्वभाव से अशुचि
रत्नत्राय से पवित्रा
मिटाकर भेदभाव
वस्तु स्वभाव में रमणता
ज्ञानी की
उत्कट धर्मप्रवणता है।
मेरे प्रभो !
ज्ञानी मनाता
निर्विचिकित्सा का त्यौहार,
ठहरकर
कभी निश्चय - कभी व्यवहार।

अमूढ़दृष्टि अंग

तुम्हारी प्रशंसा के अलावा
अन्य की प्रशंसा
न सुहाती
न कही जाती,
तुम्हारा सहज वीतरागी
स्वरूप ही ऐसा है,
कुपथगामी की प्रशंसा
ठोकरें खाकर
कूप में गिरने जैसा है।
मेरे प्रभो !
मैं इन मूढ़ताओं से दूर हूँ,
नमोस्तुशासन
और
निज ज्ञायक की प्रशंसा में
निरन्तर चूर हूँ।
अमूढ़दृष्टिपना तो
धर्म की रीढ़ है
इसके अभाव में सम्यक्त्व
कैसे सर्वांगीण है, अर्थात् नहीं।

24-09-2006
dksVk

उपगूहन अंग

तुम्हारा पथ
स्वयं शुद्ध है,
तुम्हारे पथ पर
वही चल पाता है, जो
अन्तःकरण से विशुद्ध है।
सहज शुद्ध
रत्नत्राय मार्ग पर चलने वाले
तथाकथित अज्ञानी
अथवा
अशक्त ज्ञानी
कर दें मार्ग को मलिन
तो, निन्दा नहीं करते सम्यग्दृष्टि
करते हैं सतत् प्रमार्जन
कहलाता है यह अंग उपगूहन।
मेरे प्रभो !
ऐसा मैं निरन्तर करता रहूँ
साथ ही, मार्ग की मलिनता से
सदैव डरता रहूँ।

24-09-2006
dksVk

स्थितिकरण अंग

तुम्हारी हर बात
मुझे याद आती है,
तुम मेरे पास नहीं हो
फिर भी
तुम्हारी हर बात मेरे लिये थाती है।
तुम्हीं ने तो कहा था-
सम्यग्दर्शन-चारित्रा से
गिरते हुये को थाम लेना
देकर सच्ची सांत्वना
जिनोपदेश
कर देना पुनः मार्ग में स्थिर,
जैसे
किया था स्थिर वारिषेण ने पुष्पडाल
को।
हे प्रभो !
तुम्हारा उपदेश
मैं कभी नहीं भुलाऊँगा,
करूँगा स्थितिकरण अंग का पालन
कोई कभी न गिरे? यह भावना

भाऊँगा।

वात्सल्य अंग

देखकर
स्वधर्मी/सहधर्मी समूह
कपट रहित होकर
सहज शुद्धभाव से
करो प्रीति,
सम्यग्दर्शन के आठ अंगों में
सातवें वात्सल्य अंग की है यह
नीति।
निश्चय से
शुद्ध बुद्ध आत्मा का अनुभव
चिदानन्द ज्ञानधन की प्रतीति।
मेरे प्रभो !
वात्सल्य बिन
सम्यग्दर्शन का होना कोरा विभ्रम
है,
वात्सल्य में
आठों अंगों का सहज अनुक्रम
है।
भो श्रमण !

मतकर वात्सल्य का अतिक्रमण
अन्यथा व्यर्थ है तेरा प्रतिक्रमण।

प्रभावना अंग

जिनशासन के विरोधी
अज्ञान भाव को,
संयम, तप ज्ञान से कम करने
साथ ही सतत् बढ़ाने
जिनशासन के प्रभाव को,
आगम-अध्यात्म के दायरे में
प्रकाशन की जो उमंग है,
सम्यग्दृष्टि का आठवाँ गुण
प्रभावना अंग है।
हे प्रभो !
ख्याति, लाभ, पूजा हेतू
पभावना का ढकोसला
नहीं है जिनशासन के अनुरूप,
निश्चय से शुद्धात्मा की भावना
व्यवहार से जिनशासन की प्रभावना
सम्यग्दृष्टि का यही है सम्यक्
स्वरूप।
देव शास्त्रा गुरु की अप्रभावना में
नहीं करता सहयोग
प्रभावना हेतू करता है अभिनव
प्रयोग।

25-09-2006
dkSVk

पनाह

तुम्हारी तरह
मैंने भी चुनी है
सच्ची राह,
कदम-कदम पर
लेकर
तुम्हारी पनाह !
सारी दुनिया
बदली सी नज़र आती है,
तुम्हारी निगाह
जिस पर भी पड़ जाती है।
मेरे प्रभो !
अब मैं तोड़कर भवबन्धन
तुम सम बन पाऊँगा
ऐसा मुझे विश्वास है,
क्योंकि
निर्बंध को पाने
हमारा
सतत् प्रयास है।

25-09-2006
dkSVk

मैं क्या हूँ ?

तुम्हारी नजर में
मैं क्या हूँ ?
मुझे नहीं पता,
मैं अपनी नजर में
पर्यायदृष्टि से पतित हूँ अपावन
हूँ,
खा रहा हूँ ठोकरें
चारों गतियों में कर्म बन्धन से,
द्रव्यदृष्टि से पावन हूँ
त्रिकाल में निर्बन्धन से।
मेरे प्रभो !
पर्याय में रागानन्द
द्रव्य में चिदानन्द
सिद्धसम शुद्धि की मात्रा शक्ति
है।
स्वाश्रय से
अब मैं राग तोड़ रहा हूँ
सहज अविनाशी से नाता जोड़
रहा हूँ।

25-09-2006

कविता

मुझे तुमसे
कुछ कहना नहीं आता,
लेकिन मुझे
चुप रहना भी नहीं आता।
मैं क्या करूँ ?
न मैं कह सकता हूँ
न मैं चुप रह सकता हूँ
इसलिये
लिख रहा हूँ तुम्हारे लिये
प्यारी सी कविता।
मेरे प्रभो !
यह मेरी भक्ति के फूल हैं
भावों के सौन्दर्य
समर्पण की नदी के कूल हैं।
मेरी मिट्टी की देह
कल विसर्जित हो जायेगी,
मैं न रहूँगा, लेकिन
तुम्हें मेरी प्यारी कविता
हर पल बुलायेगी।

25-09-2006

धर्मध्यान

तुम्हारे ख़्वाबों में डूबा
मैं चला जा रहा था,
नहीं पता
मुझे कौन-कौन बुला रहा था।
मेरी यह एकाग्रता ही
मेरा धर्मध्यान है,
सहज अविनाशी सुख का
परम्परा से निधान है।
मेरे प्रभो !
तुम्हारी स्मृति
मेरे जेहन में सदा छाती रहे,
शीत-गर्मी कभी न आये
सिर्फ बरसात आती रहे।
छोटी सी ज़िंदगी है
पर बहुत बड़ा ख़्याल है
आखिर अपनी ही ज़िंदगी का
सवाल है
तुम्हारा साथ तो
परमात्मा की मिशाल है।

25-09-2006
dksVk

मैं बूँद हूँ

मैं बूँद हूँ
तुम सागर हो,
तुमसे मिलकर ही
मैं
पूर्ण हो जाऊँगा,
अपने से
अपने में
सम्पूर्ण हो पाऊँगा।
खोकर मनोविकार
पाऊँगा चेतन चमत्कार
अपने लक्ष्य की ओर
निरन्तर बढ़ रहा हूँ,
ज़िंदगी तो क्या
मौत से भी लड़ रहा हूँ।
मेरे प्रभो !
पाकर तुम्हें
आनन्द मना रहा हूँ,
हर पल, हर घड़ी, तुम्हें गुनगुना
रहा हूँ।

26-09-2006
dksVk

श्रद्धा का महल

तुमसे मिलकर
ज़िंदगी
पहेली हो गई है,
दूर हो गया हूँ सबसे
फिर भी
सबकी सहेली हो गई है।
पहले कहते थे इसे 'मोह'
अब कहते हैं इसे 'प्रेम'
बाहर से तो आज भी वही हूँ
बदल गया है अन्दर का फ्रेम।
महले मैं डरता था मौत से
अब, मौत भी मुझसे डरने लगी
है
नये-नये विचार करने लगी है
मेरे प्रभो !
ज़िंदगी का हर तार
अब तुमसे जुड़ा है
सच्ची श्रद्धा का महल
मेरी साँसों पे खड़ा है।

26-09-2006
dsV

तुम्हारा इन्तजार

मुझे
तुमसे तो क्या
तुम्हारी परछाईं से भी प्यार है,
कब मिलोगे
मुझे तुम्हारा इन्तज़ार है।
मेरे प्रभो !
तू तो सबका साईं है,
जिनलिंग का धारी निर्ग्रंथ मुनि
तुम्हारी परछाईं है।
मैं, पाने को तुम्हें
तुम्हारी परछाईं बनकर जी रहा
हूँ,
तुम्हारा अप्रतिम सौन्दर्य
आत्मानुभूति के नैनों से पी रहा
हूँ।
तुमसे बढ़कर
अब कोई दूजा नहीं है,
तुम्हारे सिवा हमने

26-09-2006
dsV

किसी को पूजा नहीं है।
मेरा प्यार आज भी बरकरार है
मुझे तुम्हारा इन्तज़ार है।

26-09-2006

काजल

यह सच है
छोटे बच्चों को
माँ
काजल लगाती है,
अन्यथा
ग़ैरों की नज़र लग जाती है।
मेरे प्रभो !
मैंने भी
व्यवहार भक्ति का काजल लगाया
है,
मिथ्यात्व असंयम की
नज़र न लग जाये
इसलिये
सराग संयम को अपनाया है,
लेकिन काजल का दाग भी दाग
है
व्यवहार भक्ति का राग भी राग
है।
इसीलिये, आपकी तरह
निश्चय संयम की ओर
कदम बढ़ाया है।

26-09-2006

तुमसे मिलकर

तुमसे मिलने के लिये
हर कोई बेताब है,
अगर हुआ है
संसार, शरीर भोगों का अनुभव
पाकर निष्कर्ष
संसार खराब है।
यहाँ
सब कुछ पाकर भी अधूरापन है
यही तो संसार का स्वप्न है।
मेरे प्रभो !
तुमसे मिलकर
सत्य का ज्ञान हो जाता है,
बुद्धि का भ्रम
क्षण में खो जाता है,
फिर नहीं रहती
किसी की भी आशा बदल जाती
है
जीवन जीने की परिभाषा।

26-09-2006
dsK

तुमने कहा था

तुमने कहा था
अपराध मत करना
अपना हर काम
सोच-विचार कर
निष्प्रमाद से करना
फिर भी मैं अपराध कर जाता हूँ,
बनकर प्रमादी
अवगुणों से भर जाता हूँ।
मेरे प्रभो !
मेरे अपराध माफ करना,
देकर दिशाबोध
मेरे प्रमाद की गंदगी को
तुम्हीं आकर साफ करना।
यद्यपि मैं
निरन्तर संभल रहा हूँ
तुम्हारे बताये मार्ग पर
अविराम चल रहा हूँ।

26-09-2006
dsK

मैं अधूरा हूँ

रखकर
तुम्हारी गोद में अपना सिर
मैं सो जाना चाहता हूँ,
मृत्यु की बेला में
तुम्हारा हो जाना चाहता हूँ।
क्योंकि
कवि न कहा है -
''देहान्त के समय में,
तुमको न भूल जाऊँ'',
मेरे प्रभो !
ऐसा सम्यक् चिन्तन्
मैं हर घड़ी दोहराऊँ।
भूलकर बैरभाव
मैं क्षमा को अपनाऊँ,
कषायों की निर्वृत्ति से
निज आत्मा को पाऊँ।
मेरी भावना को पूर्ण करना
मैं अधूरा हूँ, मुझे सम्पूर्ण करना।

26-09-2006
dsVk

तुम कहोगे

देखो
मेरी बात पर हँसना मत,
मेरी गुस्ताख़ी
किसी से कहना मत।
सच कहूँ।
न मुझे दीप सा जलना आता
न मुझे फूल सा खिलना आता
न मुझे वृक्षों से फलना आता
न मुझे सूरज सा निकलना आता
मेरे प्रभो !
फिर तुम्हें क्या आता है ?
मैं बता रहा हूँ
मुझे मुनि की तरह चलना आता
है
अपने मन को मुझे बदलना आता
है
अपनी प्रिया, निज आत्मा से
मुझे मिलना आता है।

26-09-2006
dsVk

अनुसंधान

यह सच है
जिनधर्म महान है,
परन्तु
यह भी सच है
आत्मधर्म
जिनधर्म का
अनुसंधान है।
मेरी चाह
जिनधर्म पूर्वक
आत्मधर्म पूर्वक
आत्मधर्म पाने की है,
जब तक निर्वाण नहीं होता
अपना संकल्प निभाने की है।
मेरे प्रभो !
मेरा संकल्प न टूटे
मेरा भाग्य मुझसे न रूठे
बस यही कामना है,
तुम्हारे सिवा मेरा
अब कोई धाम ना है।

26-09-2006
dksVk

मैं तन्हा हूँ

मैं तन्हा हूँ
यह बोध
तुमसे मिलकर हुआ,
जैसे
ज्योति तन्हा है
उसे यह बोध
दीप में जलकर हुआ,
मेरे प्रभो !
संयोगों के मेले में
सब अपना सा लगता है
और अपना अपने में मौन
सिसकता है
आपको पाकर मैं धन्य हो गया हूँ
होकर तन्हा
निज चैतन्य में खो गया हूँ।

26-09-2006
dksVk

अनुराग

अनुभव को कहना
बहुत बड़ी बात है
अनुभूति को कहना
उससे भी बड़ी बात है
मेरे प्रभो !
आपने
मोक्ष का मार्ग बताया,
अनुभूति को
समवसरण में सुनाया।
भव्यजनों ने
अनुभव का श्रद्धान किया
चारित्रा प्रगट करके
अनुभूति को स्फुरायमान किया।
आपके अनुभव को श्रद्धान
अनुभव का ज्ञान
और मेरी अनुभूति
यही तो मोक्षमार्ग है
इसीलिये तो मुझे आपसे अनुराग
है।

26-09-2006

लोग कहते हैं

लोग कहते हैं
समय
कभी लौटता नहीं है
भो समय ! (आत्मा)
तू क्यों लौटता है
पुनः पुनः
संसार, शरीर, भागों में
क्यों लौटता है।
क्या तुझे पता नहीं
इसी कारण तो दुःख है
तेरी मान्यता में यह सुख है।
मेरे प्रभो !
तुम्हीं ने तो बताया
मान्यता ही कथंचित मिथ्यात्व है
कथंचित मान्यता ही सम्यक्त्व है
पर में लोटना (कथंचित)
यही तो मिथ्यात्व है
पर से लौटना
स्व में लोटना सम्यक्त्व है।

27-09-2006

प्रमत्त-अप्रमत्त

बच्चे
समय होते ही
ज्ञान प्राप्ति के लिये
रोज स्कूल जाते हैं,
पुनः समय होते ही
सुनकर टन-टन-टन घण्टी
दौड़-दौड़कर
अपने घर को आते हैं।
मेरे प्रभो !
निर्ग्रंथ मुनि भी
ज्ञानस्वभाव की प्राप्ति के लिये
सराग संयम के स्कूल में जाता है,
समय होते ही
दौड़कर अपने घर को आता है।
यही है प्रमत्त से अप्रमत्त दशा
ज्ञान स्वभाव की पूर्णता पाने पर
नहीं जाता स्कूल में
पा लेता है अर्हन्त-सिद्ध अवस्था।

27-09-2006
dksVk

अनुग्रह

तुम्हारा अनुग्रह
मैं भुला न पाऊँगा,
जब तक संसार में रहूँगा
तुम्हारे अनुग्रह को
गीत की तरह गाऊँगा
मेरा गीत मेरा संगीत
सब कुछ तुम हो,
मेरी प्रीत
मेरी जीत
बस एक तुम हो।
मेरे प्रभो !
लोग कहते हैं -
प्रभु ! तुम कहाँ हो ?
मैं कहता हूँ -
जरा अपने में तो देखो
तुम कहाँ हो ?
स्वामिन्, तुमने यही तो सिखाया
है
इसीलिये अनुग्रह गीतों में समाया
है।

27-09-2006
dksVk

क्योंकि

तुम्हारा
दो पल का साथ भी
हर पल सा लगता है,
क्योंकि
मंदिर में दो पल का मिलन
मन मंदिर में
हर पल चलता है।
मेरे प्रभो !
मेरे लिये तुम
दुनिया से बढ़कर हो
तुमने मुझे
पतित से पावन बनाया है
निगोद से बचाकर
निर्वाण का मार्ग बताया है।
प्रलय भी
अब मेरी श्रद्धा को नहीं डिगा
सकता
क्योंकि तुम मेरे साथ हो
वह मेरी ओर आँख भी नहीं उठा
सकता।

27-09-2006
dsk

मेरा प्रेम स्वीकार करो

तो ....मैं

अगर तुम साथ हो
तो, मैं
अपना कर्त्तव्य निभाता रहूँगा,
दुःखी पर करुणा
यतीम की सेवा
बुजुर्गों का सम्मान
धर्मात्माओं से प्रेम
सत्संग में समय लुटाता रहूँगा।
घृणा, अहंकार,
परनिन्दा, कटुव्यवहार,
दुर्वचन, मायाचार,
स्वार्थपरता, कुसंस्कार,
कुसंगति को मिटाता रहूँगा।
मेरे प्रभो !
अपने कर्त्तव्य निभाकर
मैं इन्सान बन सकूँ
तुम्हारे पथ को अपनाकर
मैं भगवान् बन सकूँ।

27-09-2006
dsk

मुझे निर्वाण दे दो

तुम मुझसे कहते हो
तुम्हें क्या चाहिये,
बोलो बेटा........
अरे कुछ तो फरमाइये।
मैं कहता हूँ –
अब क्या माँगू तुमसे
जब तुम्हें ही माँग लिया है,
आती–जाती
हर श्वाँस से हमने
जब तुम्हें ही बाँध लिया है।
मेरे प्रभो !
तुम मेरी ज़िंदगी में
नूर ही नूर हो
जिसे चुराया न जा सके
वो कोहिनूर हो।
फिर भी देना चाहते हो, तो
महाप्रयाण दे दो,
मुझे निर्वाण दे दो।

27–09–2006
dksVk

आत्मजेता

लोग कहते हैं
हम मृत्यु को जीतना चाहते हैं
इसीलिये
धर्म साधना – आराधना करते हैं
मैं कहता हूँ
मैं मृत्यु को नहीं
अपने आप को जीतना चाहता हूँ
भगवान महावीर की तरह
जितेन्द्रिय बनना चाहता हूँ।
मेरे प्रभो !
तुम्हीं ने तो बताया
धर्म; दूसरों को नहीं
स्वयं को जीतना सिखाता है,
स्वयं का विजेता तो
मृत्युजेता अपने आप हो जाता
है।
आत्मजेता ही सच्चा साधक है
सर्वश्रेष्ठ जैनधर्म का
सच्चा आराधक है।

27–09–2006
dksVk

सफलता

सारी दुनिया को खोकर
मैंने तुमको पाया है,
माँजकर हृदय अपना
तुम्हें
हृदयासन पर बिठाया है।
अब मैं
तुम्हारे बिन रह नहीं सकता,
ज़िंदगी में अब तुम हो
मेरी प्रथम आवश्यकता।
मेरे प्रभो !
मैं भवसागर तिरना चाहता हूँ,
राग की रिक्तता
सर्वप्रथम अनुराग से भरना चाहता
हूँ,
अनुराग बिन मार्ग भी नहीं मिलता,
वीतराग होने की
यह है पहली सफलता।
मैं सही दिशा में जा रहा हूँ
आपकी तरह स्वानुभव को पा
रहा हूँ।

28-09-2006
dsk

कैसे बताऊँ तुम्हें

कैसे बताऊँ तुम्हें
तुमसे दूर रहकर
अब तक क्या पाया है ?
आग ने
तन को जलाया है
राग ने
चेतन को जलाया है
सुख की आशा में
पंच परार्वतन रूप
संसार का दुःख ही दुःख पाया है।
मेरे प्रभो !
आप तो अनन्त सुख में लीन हो,
संसार के दुःख से मुक्त
सहज स्वीधीन हो।
मेरी नौका
आज भी मँझधार है
माँझी बनकर तिरा दो
मुझे इन्तज़ार है।

28-09-2006
dsk

मैं चाहता हूँ

मैं चाहता हूँ
हर घर की दीवार गिरा दूँ
लेकिन
ऐसा होना संभव नहीं।
अगर
मन से भेदभाव की दीवार गिर
जाये
तो
समष्टि एक होगी।
मेरे प्रभो !
जहाँ भेदभाव पूर्ण
मन की दीवार गिर जाये
उगे मैत्राी का वृक्ष
सर्प और नेवला की तरह
गाय और सिंह की तरह
वही तो समवसरण है।
मुझे नहीं पता
ऐसा कब होगा ?; लेकिन
मेरी भावना आपका ही अनुसरण
है।

28-09-2006
dsK

कदम (प्प्)

तुम्हारे कदमों की आहट
मुझे सुनाई देती है
तभी तो मैं
तुम्हारी तरह
ईर्यासमिति से चल पाता हूँ,
सोचकर
कदमों की प्रतिस्पर्धा
आपसे कर रहा हूँ
तभी तो
अपने कदम बदल पाता हूँ।
मेरे प्रभो !
सच कहूँ
मैं आपसे पीछे नहीं रहना चाहता
लेकिन आपसे आगे भी नहीं,
मैं सिर्फ
आप जैसा होना चाहता हूँ
इसीलिये अपने कदम
आप जैसे रखना चाहता हूँ।

28-09-2006
dsK

मैं ज्ञायक हूँ

जब से
तुम मिले हो
मेरी तो
किस्मत ही बदल गई,
आपवन चेतना
आपके
साँचे में ढल गई।
दूर हो गई
अब दुनियाँ से गिला
ढल गई शिकवा की अमावस
जब से मुझे
स्वानुभूति का बल मिला।
मेरे प्रभो !
मैं ज्ञायक हूँ - मैं ज्ञायक हूँ
अब एक ही शोर है
जहाँ भी देखता हूँ
हर तरफ
अब भोर ही भोर है।

निकट

ओ मेरे प्रिय !
तुम्हीं ने तो कहा था
आओ मेरे निकट,
दूर हो जायेंगे सभी संकट।
जब मैं
तुम्हारे निकट आ गया
होकर पूर्ण समर्पित
जब तुम्हारा साथ मुझमें भा गया
अब कहते हो
जाओ अपने निकट
तभी हो पायेंगे दूर सभी संकट।
मेरे प्रभो !
यह कैसा मजाक है ?
मेरी परीक्षा है
या मेरा उपहास है ?
ख़ैर, जो भी हो
तुम कभी किसी का बुरा नहीं
करते
इसलिये, तुम जैसा कहोगे - वैसा
करेंगे
हम भी बिल्कुल नहीं डरते।

प्यास

तुम्हें पाकर
हमने अपनी ज़िंदगी बना ली है,
हर आरज़ू - हर तमन्ना
हर ख़्वाहिश
तुम्हें पाकर पा ली है।
अब मैं
सिर्फ तुम्हारा होकर रहूँगा,
दुनिया कितना भी आमंत्राण दे
स्वीकार नहीं करूँगा।
तुम्हारा साथ
दुर्गति से बचाता है,
भव्य जीवों को
सुगति - समाधि
और मुक्ति को दिलाता है।
मेरे प्रभो !
हृदय में हमारे इतनी ही अभिलाषा
है
समाधि को पा सकूँ
मुझे मुक्ति की प्यास है।

ु

29-09-2006
dsk

दान या निदान

तुमसे क्या छुपाऊँ ?
हृदय की बात
तुम्हीं तो मेरे अपने हो
इसलिये हर बात बेझिझक बताऊँ।
प्रभो !
धन के धर्म का
अब शोर हो चला है
धर्म का धन, अब कमजोर हो
चला है
साधु अपने नाम के लिये
गिरि, मंदिर, संतधाम के लिये
श्रावकों को लूट रहे हैं
भरी सभाओं में दानपति की पदवी
से
श्रावकों के भाग्य फूट रहे हैं
आज श्रावक दान के नाम पर
निदान कर रहे हैं
सन्त उनके इस काम को
आर्शीवाद प्रदान कर रहे हैं
सोचता हूँ - क्या यही वीतराग ६

30-09-2006
dsk

र्म है ?
सन्त और श्रावकों का हीन कर्म
है।

30-09-2006
dksVk

अभिषेक

जब मैंने
प्रथम बार अभिषेक किया
तुम्हें छूकर
अत्यन्त रोमांचित हुआ
मन में
बार-बार छूने का भाव जगने
लगा
मैं अभिषेक रोज-रोज करने लगा
मेरी विशुद्धि
और भावों की निर्मलता बढ़ने
लगी
मेरी कषाय मुझसे ही चिढ़ने लगी
मेरे प्रभो !
तुम्हें छूकर ऐसा लगा
मैंने भगवान् को पा लिया है,
मिथ्यात्व में सोती चेतना को
जैसे आज जगा लिया है।
अब मैं तुम्हें
हाथ से नहीं भावों से छू रहा हूँ
तुम्हारी याद में पल-पल जी रहा
हूँ

30-09-2006
dksVk

मेरे प्रभो !

पहले सोचता था
तुम कहाँ हो
अब सोचता हूँ, अनुभव करता हूँ
मैं जहाँ हूँ - तुम वहाँ हो।
ज्ञानोपयोग
कितना बदल गया,
पहले बाहर खोजता था
अब अन्दर की ओर ढल गया।
मिट गया
भव-भव का क्लेश
अकर्मण्यता का नहीं रहा श्लेश
मेरे प्रभो !
ज्ञान रूपान्तरण की कीमिया है
ध्यान रूपान्तरण की कला है
आनन्द रूपान्तरण का फल है,
ज्ञान, ध्यान, आनन्द
ये तीनों जहाँ हैं
वही जीवन सफल है।

30-09-2006
dksVk

सजा-मज़ा

मेरे लिये
तुम्हारी शरण में मरण भी
जीवन की सफलता है,
तुम्हारे सिवा
सागरों पर्यन्त आयु का सुख
जीवन की विफलता है।
मेरे हृदय की यह सच्चाई
तुम्हारे सिवा
कोई नहीं जानता,
सारी दुनिया
महज इन्द्रिय विषय संयोगों में
कह रही है सुख की मान्यता।
मेरे प्रभो !
मुझे अपनी शरण दे दो - मरण
दे दो
लेकिन
अपने से दूर होने की सजा मत
देना
इन्द्रिय सुख में गाफ़िल हो जाऊँ
ऐसा मज़ा मत देना।

30-09-2006
dksVk

मुझे तो.....

छोड़कर
तुम्हारा साथ
जो भी इठलाया है,
क्षणिक चकाचौंध ने
पर्याय की प्रकर्षता को
आग में जलाया है।
पाकर
पार्श्वमणि पत्थर
क्षणिक मन की शान्ति के लिये
काग पर चलाया है,
पाने को जरा सा सूत
रत्नों के हार को तुड़ाया है।
मेरे प्रभो !
मुझे तो तुम्हारा साथि चाहिये
चाहे दिन हो या रात
आशीर्वाद का सिर पे हाथ चाहिये
आपके श्री चरणों में झुका हुआ
निरन्तर अपना माथ चाहिये।

ॐ

जीवन की डोर

ओ मेरी ज़िंदगी के मालिक
मैंने
सौंप दिया है तुम्हें अपना जीवन
बनाना हो बना दो
मिटाना है मिटा दो।
लौटाना है लौटा दो
मुझे निज आत्मा की ओर,
बढ़ाना है बढ़ा दो
मुझे निज आत्मज्ञान से
खाली करना है कर दो
आर्त्त-रौद्र ध्यान से।
मेरे प्रभो !
मेरे जीवन की डोर
तुम्हारे हाथ में है
तुम जो भी करते हो अच्छा करते
हो
तुम्हारी दुआ हमारे साथ में है।

ॐ

कर्त्तव्य

मुझे
अपना कर्त्तव्य पालन करना है,
बाधाओं में रहकर भी
आगन्तुक कष्टों को सहकर भी
मुझे सही राह पर चलना है।
मेरे प्रभो !
तुमने मुझसे
इतना ही तो चाहा है,
जो भी इस राह चला
उसे कदम-कदम पर सराहा है।
यह सच है
कर्त्तव्यपालन के बिना
सस्कार नहीं आते,
बिना संस्कारों के
हम अधूरे ही रह जाते।
मैं अपने कर्त्तव्य निभाऊँगा
संस्कारों को प्रगट करके
तुम सब बन जाऊँगा।

30-09-2006
dksVk